

## Quick word tests

तरक्क्री	तरक्क्री	आह्लाद	आह्लाद	फ्रीज	फ्रीज	मगज़	मगज़	हृत्स्थल	हृत्स्थल	सिर्फ	सिर्फ
ज़्यादा	ज़्यादा	ब्राह्मण	ब्राह्मण	हितिक	हितिक	सम्यग्ज्ञान	सम्यग्ज्ञान	ज्योत्स्ना	ज्योत्स्ना	व्हिस्की	व्हिस्की
मन्ज़ूर	मन्ज़ूर	मिस्त्री	मिस्त्री	एल्जे	एल्जे	दिग्दर्शन	दिग्दर्शन	ईषत्स्पृष्ट	ईषत्स्पृष्ट	इश्क	इश्क
इलेक्ट्रान	इलेक्ट्रान	दुष्प्रह्य	दुष्प्रह्य	उत्प	उत्प	पंक्ति	पंक्ति	उत्सुत	उत्सुत	प्रश्न	प्रश्न
स्ट्रीटकार	स्ट्रीटकार	अद्भुत	अद्भुत	उत्प	उत्प	मंगलवार	मंगलवार	सद्गति	सद्गति	रुश्द	रुश्द
छुट्टी	छुट्टी	इल्ज़ाम	इल्ज़ाम	रत्न	रत्न	दुर्लभ्य	दुर्लभ्य	सद्गन्ध	सद्गन्ध	वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य
महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अक्षरे	अक्षरे	सज़्स	सज़्स	पच्चीस	पच्चीस	उद्घाटन	उद्घाटन	ओष्ठ्य	ओष्ठ्य
ज्येष्ठ	ज्येष्ठ	ज्ञान	ज्ञान	एज्जा	एज्जा	अच्छा	अच्छा	ज़िद्दी	ज़िद्दी	मिस्त्री	मिस्त्री
दर्शात	दर्शात	मौके	मौके	ब्यर्थे	ब्यर्थे	उज्ज	उज्ज	प्रसिद्ध	प्रसिद्ध	आह्वान	आह्वान
चिट्ठी	चिट्ठी	कैंटोमेंट	कैंटोमेंट	तरक्क्री	तरक्क्री	संस्कृत	संस्कृत	उद्बोध	उद्बोध	आह्लाद	आह्लाद
वाङ्मय	वाङ्मय	छूट कुछ	छूट कुछ	फ़ैक्चर	फ़ैक्चर	हिंस्र	हिंस्र	द्रव	द्रव	हास	हास
वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य	करेंट	करेंट	डॉक्टर	डॉक्टर	छुट्टी	छुट्टी	दारिद्र्य	दारिद्र्य	अंकुड़ा	अंकुड़ा
पुनस्स्थापना	पुनस्स्थापना	राष्ट्रून	राष्ट्रून	इलेक्ट्रॉन	इलेक्ट्रॉन	चिट्ठी	चिट्ठी	अधुव	अधुव	अंतर्निहित	अंतर्निहित
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य	काँफी	काँफी	रक्त	रक्त	विशाखपटनम	विशाखपटनम	मंज़ूर	मंज़ूर	अन्तः	अन्तः
कम्प्यूटर	कम्प्यूटर	हिंदू-मुस्लिम	हिंदू-मुस्लिम	वक्त्र	वक्त्र	ट्रेन	ट्रेन	मंज़ी	मंज़ी	अंतर्वेशन	अंतर्वेशन
सान्ध्य	सान्ध्य	करणाया	करणाया	युक्त्यभास	युक्त्यभास	सुपाठ्य	सुपाठ्य	स्वातंत्र्य	स्वातंत्र्य	अग्नि	अग्नि
इज़्जत	इज़्जत	स्नेह	स्नेह	वक्त्र	वक्त्र	लड्डू	लड्डू	द्वंद्व	द्वंद्व	अद्भुत	अद्भुत
उज्ज्वल	उज्ज्वल	श्री	श्री	शुक्ल	शुक्ल	ब्रह्मण्य	ब्रह्मण्य	उन्नीस	उन्नीस	छुछुंदर	छुछुंदर
प्राप्त्याशा	प्राप्त्याशा	स्त्री	स्त्री	रिक्षा	रिक्षा	उत्क्रम	उत्क्रम	इंस्टिट्यूट	इंस्टिट्यूट	हुंकार	हुंकार
इकत्तीस	इकत्तीस	ध्यां	ध्यां	पक्ष	पक्ष	उत्क्षेप	उत्क्षेप	उन्हें	उन्हें	हित इच्छुक	हित इच्छुक
सत्रह	सत्रह	शक्ति	शक्ति	लक्ष्मी	लक्ष्मी	विद्युत्प्रहक	विद्युत्प्रहक	दीन्ह्यो	दीन्ह्यो	कुरी	कुरी
पद्म	पद्म	महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अभक्ष्य	अभक्ष्य	महत्त्व	महत्त्व	नैप्स्यून	नैप्स्यून	कुल्हिया	कुल्हिया
विद्यार्थी	विद्यार्थी	कट्टू	कट्टू	दिक्स्थापन	दिक्स्थापन	पत्थर	पत्थर	प्राप्त	प्राप्त		
उन्नीस	उन्नीस	रूप	रूप	सख्त	सख्त	विद्युत्दर्शी	विद्युत्दर्शी	सब्जी	सब्जी		
पश्चिम	पश्चिम	हूँ	हूँ	अख्त्यार	अख्त्यार	पत्नी	पत्नी	छब्बीस	छब्बीस		
श्रीलंका	श्रीलंका	बुत्तो	बुत्तो	ज़ख्म	ज़ख्म	सपत्न्य	सपत्न्य	मार्किट	मार्किट		
विश्वविद्यालय	विश्वविद्यालय	बार्गी	बार्गी	ख्रिष्टां	ख्रिष्टां	उत्प्रवास	उत्प्रवास	दुर्ज्ञेय	दुर्ज्ञेय		
स्नान	स्नान	कुंग	कुंग	फ़ख्र	फ़ख्र	ल्याहिक	ल्याहिक	उर्दू	उर्दू		
बुद्ध	बुद्ध	हूप	हूप	अग्रास	अग्रास	विद्युतशक्ति	विद्युतशक्ति	निर्द्वन्द्व	निर्द्वन्द्व		

## चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्रवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ॥ अर्थात् तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात् एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात् निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात् उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागति जाते हैं जो खुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो खुद ढूँढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें [m.jagran.com](http://m.jagran.com) पर

## चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्रवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ ॥ अर्थात् तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात् एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात् निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात् उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागति जाते हैं जो खुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो खुद ढूँढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें [m.jagran.com](http://m.jagran.com) पर

गुदगुदी | शायरी | टेक ज्ञान | Hinglish News | गेम्स | गरमा गरम | Travel | Deals | Property | चुनाव

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके,  
मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा  
निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा  
विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत,  
चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शुल्क  
बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए  
दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं  
होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में  
मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के  
सामने लगे 'प्रियंका-  
प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा  
विदेशी पूंजी का टॉनिक

उग्र में अंधेरा दूर करने के लिए  
ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध  
बच्चियों से दुष्कर्म

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके,  
मिडकैप-स्मॉलकैप में  
उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा  
निकालने पर देना होगा  
टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा  
विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की  
मेहनत, चीन से आया  
तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद  
शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए  
दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं  
होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़  
में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के  
सामने लगे 'प्रियंका-  
प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा  
विदेशी पूंजी का टॉनिक

उग्र में अंधेरा दूर करने के  
लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो  
अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

## 119 देशों के बच्चों ने UAE का राष्ट्रगान गाकर बनाया रिकॉर्ड

### केवल 6 सेकेंड में 'आउट ऑफ स्टॉक' हुआ जियाओमी रेडमी नोट

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगा-पिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़ें - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़ें - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

# तीन मिररलेस कैमरे के साथ आया निकॉन

Publish Date: Mon, 01 Dec 2014 10:12 AM (IST) | Updated Date: Mon, 01 Dec 2014 11:35 AM (IST)

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमशः 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमांस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1 वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमांस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमशः 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमांस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1 वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमांस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

बेंगलुरु। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

बेंगलुरु। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत सफलता है और शानदार अहसास है। केकेआर का हिस्सा बनकर बहुत अच्छा महसूस होता है और

फोटो में देखें, क्या हुआ जब ग्रैंड फैशन इंवेट में Bollywood Divas ने रैंप पर उतरकर बिखेरे जलवे

## गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवतः खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रखे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नही होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस दब से होता, इस बखेड़े को

## गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवतः खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट ॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रखे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान ॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नही होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को



टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसँ भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोटा हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसँ भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोटा हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

pg 7/18

पपरुपवपवरुवव  
पपरूपवपवरूवव  
पपदुपवपवदुवव  
पपदूपवपवदूवव  
पपदृपवपवदृवव

Vowel sign spacing

पपपंपपरंपपकंपप  
पपपॅपपरॅपपकॅपप  
पपपँपपरँपपकँपप  
पपपँपपरँपपकँपप  
पपपैपपरैपपकैपप  
पपपैंपपरैंपपकैंपप  
पपपैपपरैपपकैपप  
पपपैंपपरैंपपकैंपप  
पपपैपपरैपपकैपप  
पपपैंपपरैंपपकैंपप  
पपपैपपरैपपकैपप  
पपपैंपपरैंपपकैंपप

पपपापपरापपकापप  
पपपिपपरिपपकिपप  
पपपीपपरीपपकीपप  
पपपीपपरीपपकीपप  
पपपापपरापपकापप  
पपपापपरापपकापप  
पपपीपपरीपपकीपप  
पपपीपपरीपपकीपप  
पपपापपरापपकापप  
पपपापपरापपकापप  
पपपीपपरीपपकीपप  
पपपीपपरीपपकीपप

पपपौपपरौपपकौपप  
पपपौपपरौपपकौपप  
पपपौपपरौपपकौपप

पपपुपपरुपपकुपप  
पपपूपपरूपपकूपप  
पपपृपपरूपपकृपप  
पपपृपपरूपपकृपप  
पपप्लपपरूपपकृपप  
पपप्लपपरूपपकृपप

पपपपपरपपकपप  
पपपपपरपपकपप  
पपपपपरपपकपप  
पपपपपरपपकपप  
पपपपपरपपकपप  
पपपपपरपपकपप  
पपपपपरपपकपप  
पपपपपरपपकपप  
पपपपपरपपकपप  
पपपपपरपपकपप  
पपपपपरपपकपप  
पपपपपरपपकपप

पपपऽपवपववऽवव  
पप?पवपव?वव  
पपपःपवपववःवव

Numeral spacing

००००१०१०११  
००१०१०११११  
००२०१०१२११  
००३०१०१३११  
००४०१०१४११  
००५०१०१५११  
००६०१०१६११  
००७०१०१७११  
००८०१०१८११  
००९०१०१९११

Letter-punct spacing

पपक, पवक.  
पपख, पवख.  
पपग, पवग.  
पपघ, पवघ.  
पपङ, पवङ.  
पपच, पवच.  
पपछ, पवछ.  
पपज, पवज.  
पपझ, पवझ.  
पपञ, पवञ.  
पपट, पवट.  
पपठ, पवठ.  
पपड, पवड.  
पपढ, पवढ.  
पपण, पवण.  
पपत, पवत.  
पपथ, पवथ.  
पपद, पवद.  
पपध, पवध.  
पपन, पवन.  
पपप, पवप.

पपफ, पवफ.  
पपब, पवब.  
पपभ, पवभ.  
पपम, पवम.  
पपय, पवय.  
पपर, पवर.  
पपल, पवल.  
पपळ, पवळ.  
पपव, पवव.  
पपश, पवश.  
पपष, पवष.  
पपस, पवस.  
पपह, पवह.  
पपक्र, पवक्र.  
पपख, पवख.  
पपग, पवग.  
पपज, पवज.  
पपङ, पवङ.  
पपढ, पवढ.  
पपफ़, पवफ़.  
पपय़, पवय़.  
पपक्ष, पवक्ष.  
पपज्ञ, पवज्ञ.

पपअ, पवअ.  
पपओ, पवओ.  
पपऑ, पवऑ.  
पपइ, पवइ.  
पपई, पवई.  
पपउ, पवउ.  
पपऊ, पवऊ.  
पपए, पवए.  
पपऐ, पवऐ.  
पपऐ, पवऐ.  
पपऐ, पवऐ.

पपआ, पवआ.  
पपओ, पवओ.  
पपऔ, पवऔ.  
पपक्र, पवक्र.  
पपक्र, पवक्र.  
पपल, पवल.  
पपल, पवल.

पपझ, पवझ.  
पपछ, पवछ.  
पपट, पवट.  
पपट, पवट.  
पपड, पवड.  
पपढ, पवढ.  
पपट, पवट.  
पपट, पवट.  
पपह, पवह.  
पपळ, पवळ.

पपक्त, पवक्त.  
पपङ्ग, पवङ्ग.  
पपङ्ग, पवङ्ग.  
पपट, पवट.  
पपट, पवट.  
पपट, पवट.  
पपड, पवड.  
पपड, पवड.  
पपड, पवड.  
पपड, पवड.  
पपट, पवट.  
पपट, पवट.  
पपट, पवट.  
पपट, पवट.  
पपट, पवट.  
पपट, पवट.

पपद्, पवद्.  
पपष्ट, पवष्ट.  
पपष्ट, पवष्ट.  
पपष्ठ, पवष्ठ.  
पपल्ल, पवल्ल.  
पपल्ल, पवल्ल.  
पपल्ल, पवल्ल.  
पपल्ल, पवल्ल.  
पपल्ल, पवल्ल.  
पपल्ल, पवल्ल.

पपहु, पवहु.  
पपहु, पवहु.  
पपहु, पवहु.  
पपहु, पवहु.  
पपहु, पवहु.  
पपहु, पवहु.  
पपहु, पवहु.  
पपहु, पवहु.  
पपहु, पवहु.  
पपहु, पवहु.  
पपहु, पवहु.

-  
पपक; पवक:  
पपख; पवख:  
पपग; पवग:  
पपघ; पवघ:  
पपङ; पवङ:  
पपच; पवच:  
पपछ; पवछ:  
पपज; पवज:  
पपझ; पवझ:  
पपञ; पवञ:  
पपट; पवट:  
पपठ; पवठ:



पपड; पवडः	पपअँ; पवअँः	पपडू; पवडूः	पपघ। पवघः	पपड़। पवड़ः	पपह। पवहः	पपरू। पवरूः
पपढ; पवढः	पपइ; पवइः	पपडू; पवडूः	पपङ। पवङः	पपढ़। पवढ़ः	पपळ। पवळः	पपटु। पवटुः
पपण; पवणः	पपई; पवईः	पपडू; पवडूः	पपच। पवचः	पपफ़। पवफ़ः		पपटू। पवटूः
पपत; पवतः	पपउ; पवउः	पपद्ध; पवद्धः	पपछ। पवछः	पपय़। पवय़ः	पपक्त। पवक्तः	पपटृ। पवटृः
पपथ; पवथः	पपऊ; पवऊः	पपद्ग; पवद्गः	पपज। पवजः	पपक्ष। पवक्षः	पपङ्ग्य। पवङ्ग्यः	-
पपद; पवदः	पपए; पवएः	पपद्ध; पवद्धः	पपझ। पवझः	पपज्ञ। पवज्ञः	पपछ्य। पवछ्यः	
पपध; पवधः	पपऐ; पवऐः	पपद्ध; पवद्धः	पपञ। पवञः		पपट्ट। पवट्टः	पपक। पवकः
पपन; पवनः	पपऐँ; पवऐँः	पपद्ध; पवद्धः	पपट। पवटः	पपअ। पवअः	पपट्ट। पवट्टः	पपख। पवखः
पपप; पवपः	पपऐँ; पवऐँः	पपद्ध; पवद्धः	पपठ। पवठः	पपअँ। पवअँः	पपट्ट। पवट्टः	पपग। पवगः
पपफ; पवफः	पपआ; पवआः	पपद्द; पवद्दः	पपड। पवडः	पपअँ। पवअँः	पपडू। पवडूः	पपघ। पवघः
पपब; पवबः	पपओ; पवओः	पपष्ट; पवष्टः	पपढ। पवढः	पपइ। पवइः	पपडू। पवडूः	पपङ। पवङः
पपभ; पवभः	पपऔ; पवऔः	पपष्ट; पवष्टः	पपण। पवणः	पपई। पवईः	पपडू। पवडूः	पपच। पवचः
पपम; पवमः	पपऋ; पवऋः	पपष्ठ; पवष्ठः	पपत। पवतः	पपउ। पवउः	पपद्ध। पवद्धः	पपछ। पवछः
पपय; पवयः	पपऋ; पवऋः	पपह्ण; पवह्णः	पपथ। पवथः	पपऊ। पवऊः	पपद्ग। पवद्गः	पपज। पवजः
पपर; पवरः	पपलृ; पवलृः	पपह्ण; पवह्णः	पपद। पवदः	पपए। पवएः	पपद्ध। पवद्धः	पपझ। पवझः
पपल; पवलः	पपलृ; पवलृः	पपह्ण; पवह्णः	पपध। पवधः	पपऐ। पवऐः	पपद्ध। पवद्धः	पपञ। पवञः
पपळ; पवळः		पपह्ण; पवह्णः	पपन। पवनः	पपऐँ। पवऐँः	पपद्ध। पवद्धः	पपट। पवटः
पपव; पववः		पपह्ण; पवह्णः	पपप। पवपः	पपऐँ। पवऐँः	पपद्ध। पवद्धः	पपठ। पवठः
पपश; पवशः	पपङ्ग; पवङ्गः		पपफ। पवफः	पपआ। पवआः	पपद्द। पवद्दः	पपड। पवडः
पपष; पवषः	पपछ; पवछः	पपहु; पवहुः	पपब। पवबः	पपओ। पवओः	पपष्ट। पवष्टः	पपढ। पवढः
पपस; पवसः	पपट्र; पवट्रः	पपहू; पवहूः	पपभ। पवभः	पपऔ। पवऔः	पपष्ट। पवष्टः	पपण। पवणः
पपह; पवहः	पपट्र; पवट्रः	पपहू; पवहूः	पपम। पवमः	पपऋ। पवऋः	पपष्ठ। पवष्ठः	पपत। पवतः
पपक्र; पवक्रः	पपङ्ग; पवङ्गः	पपहू; पवहूः	पपय। पवयः	पपऋ। पवऋः	पपह्ण। पवह्णः	पपथ। पवथः
पपख; पवखः	पपद्ग; पवद्गः	पपहु; पवहुः	पपर। पवरः	पपलृ। पवलृः	पपह्ण। पवह्णः	पपद। पवदः
पपग; पवगः	पपद्ग; पवद्गः	पपहू; पवहूः	पपल। पवलः	पपलृ। पवलृः	पपह्ण। पवह्णः	पपध। पवधः
पपज; पवजः	पपरू; पवरूः	पपरु; पवरुः	पपळ। पवळः		पपह्ण। पवह्णः	पपन। पवनः
पपड़; पवड़ः	पपह; पवहः	पपरू; पवरूः	पपव। पववः	पपङ्ग। पवङ्गः	पपह्ण। पवह्णः	पपप। पवपः
पपढ; पवढः	पपळ; पवळः	पपटु; पवटुः	पपश। पवशः	पपछ। पवछः		पपफ। पवफः
पपफ; पवफः		पपटू; पवटूः	पपष। पवषः	पपट्र। पवट्रः	पपहु। पवहुः	पपब। पवबः
पपय; पवयः	पपक्त; पवक्तः	पपटृ; पवटृः	पपस। पवसः	पपट्र। पवट्रः	पपहू। पवहूः	पपभ। पवभः
पपक्ष; पवक्षः	पपङ्ग्य; पवङ्ग्यः		पपह। पवहः	पपङ्ग। पवङ्गः	पपहू। पवहूः	पपम। पवमः
पपज्ञ; पवज्ञः	पपछ्य; पवछ्यः	-	पपक्र। पवक्रः	पपङ्ग। पवङ्गः	पपहू। पवहूः	पपय। पवयः
	पपट्ट; पवट्टः	पपक। पवकः	पपख। पवखः	पपद्र। पवद्रः	पपहु। पवहुः	पपर। पवरः
पपअ; पवअः	पपट्ट; पवट्टः	पपख। पवखः	पपग। पवगः	पपद्र। पवद्रः	पपहू। पवहूः	पपल। पवलः
पपअँ; पवअँः	पपट्ट; पवट्टः	पपग। पवगः	पपज। पवजः	पपरू। पवरूः	पपरु। पवरुः	पपळ। पवळः

पपव! पवव?	पपइ! पवइ?		पपफ-फपव	पपआ-आपव	पपद्-दपव	"डपवपड"
पपश! पवश?	पपछ! पवछ?		पपब-बपव	पपओ-ओपव	पपष्ट-ष्टपव	"ढपवपढ"
पपष! पवष?	पपट! पवट?	पपहु! पवहु?	पपभ-भपव	पपऔ-औपव	पपष्ट-ष्टपव	"णपवपण"
पपस! पवस?	पपट्र! पवट्र?	पपह! पवह?	पपम-मपव	पपऋ-ऋपव	पपष्ट-ष्टपव	"तपवपत"
पपह! पवह?	पपड्र! पवड्र?	पपह! पवह?	पपय-यपव	पपऋ-ऋपव	पपल्ल-ल्लपव	"थपवपथ"
पपक्र! पवक्र?	पपद्र! पवद्र?	पपहु! पवहु?	पपर-रपव	पपलृ-लृपव	पपल्ल-ल्लपव	"दपवपद"
पपरख! पवरख?	पपद्र! पवद्र?	पपहु! पवहु?	पपल-लपव	पपलृ-लृपव	पपल्ल-ल्लपव	"धपवपध"
पपग! पवग?	पपरु! पवरु?	पपरु! पवरु?	पपळ-ळपव		पपल्ल-ल्लपव	"नपवपन"
पपज! पवज?	पपह! पवह?	पपरु! पवरु?	पपव-वपव	पपइ-इपव	पपल्ल-ल्लपव	"पपवपप"
पपड़! पवड़?	पपळ! पवळ?	पपदु! पवदु?	पपश-शपव	पपछ-छपव		"फपवपफ"
पपढ़! पवढ़?		पपदू! पवदू?	पपष-षपव	पपट्र-ट्रपव	पपहु-हुपव	"बपवपब"
पपक्र! पवक्र?	पपक्त! पवक्त?	पपदृ! पवदृ?	पपस-सपव	पपट्र-ट्रपव	पपहु-हुपव	"भपवपभ"
पपय! पवय?	पपक्य! पवक्य?		पपह-हपव	पपइ-इपव	पपह-हपव	"मपवपम"
पपक्ष! पवक्ष?	पपछ्य! पवछ्य?	-	पपक्र-क्रपव	पपद्र-द्रपव	पपह-हपव	"यपवपय"
पपज्ञ! पवज्ञ?	पपट्र! पवट्र?	पपक-कपव	पपख-खपव	पपद्र-द्रपव	पपहु-हुपव	"रपवपर"
	पपट्र! पवट्र?	पपख-खपव	पपग-गपव	पपरु-रुपव	पपहु-हुपव	"लपवपल"
पपअ! पवअ?	पपठु! पवठु?	पपग-गपव	पपज-जपव	पपह-हपव	पपरु-रुपव	"ळपवपळ"
पपअ! पवअ?	पपडु! पवडु?	पपघ-घपव	पपड़-ड़पव	पपह-हपव	पपरु-रुपव	"वपवपव"
पपअ! पवअ?	पपडु! पवडु?	पपङ-ङपव	पपढ़-ढ़पव	पपळ-ळपव	पपदु-दुपव	"शपवपश"
पपइ! पवइ?	पपडु! पवडु?	पपच-चपव	पपक्र-क्रपव		पपदू-दूपव	"षपवपष"
पपई! पवई?	पपद्र! पवद्र?	पपछ-छपव	पपय-यपव	पपक्त-क्तपव	पपदृ-दृपव	"सपवपस"
पपउ! पवउ?	पपद्र! पवद्र?	पपज-जपव	पपक्ष-क्षपव	पपक्य-क्यपव		"हपवपह"
पपऊ! पवऊ?	पपद्र! पवद्र?	पपझ-झपव	पपज्ञ-ज्ञपव	पपछ्य-छ्यपव	-	"क्रपवपक्र"
पपए! पवए?	पपद्र! पवद्र?	पपञ-ञपव		पपट्र-ट्रपव	"कपवपक"	"खपवपख"
पपऐ! पवऐ?	पपद्र! पवद्र?	पपट-टपव	पपअ-अपव	पपट्र-ट्रपव	"खपवपख"	"गपवपग"
पपऐ! पवऐ?	पपद्र! पवद्र?	पपठ-ठपव	पपअ-अपव	पपठ-ठपव	"गपवपग"	"जपवपज"
पपऐ! पवऐ?	पपह! पवह?	पपड-डपव	पपअ-अपव	पपडु-डुपव	"घपवपघ"	"ङपवपङ"
पपआ! पवआ?	पपष्ट! पवष्ट?	पपढ-ढपव	पपइ-इपव	पपडु-डुपव	"डपवपड"	"ढपवपढ"
पपओ! पवओ?	पपष्ट! पवष्ट?	पपण-णपव	पपई-ईपव	पपडु-डुपव	"चपवपच"	"क्रपवपक्र"
पपऔ! पवऔ?	पपष्ट! पवष्ट?	पपत-तपव	पपउ-उपव	पपद्र-द्रपव	"छपवपछ"	"यपवपय"
पपक्र! पवक्र?	पपल्ल! पवल्ल?	पपथ-थपव	पपऊ-ऊपव	पपद्र-द्रपव	"जपवपज"	"क्षपवपक्ष"
पपक्र! पवक्र?	पपल्ल! पवल्ल?	पपद-दपव	पपए-एपव	पपद्र-द्रपव	"झपवपझ"	"ज्ञपवपज्ञ"
पपलृ! पवलृ?	पपल्ल! पवल्ल?	पपध-धपव	पपऐ-ऐपव	पपद्र-द्रपव	"ञपवपञ"	
पपलृ! पवलृ?	पपल्ल! पवल्ल?	पपन-नपव	पपऐ-ऐपव	पपद्र-द्रपव	"टपवपट"	"अपवपअ"
	पपल्ल! पवल्ल?	पपप-पपव	पपऐ-ऐपव	पपद्र-द्रपव	"ठपवपठ"	"औपवपऔ"

"अँपवपअँ"	"डुपवपडु"	Num-punct spacing	li Vowel sign - base
"इपवपइ"	"ढुपवपढु"	पवप ₹१०१ वपव	पपकिपपकिंपपकिंपप
"ईपवपई"	"द्धपवपद्ध"	पवप ₹२०१ वपव	पपखिपपखिंपपखिंपप
"उपवपउ"	"दुपवपदु"	पवप ₹३०१ वपव	पपगिपपगिंपपगिंपप
"ऊपवपऊ"	"ढुपवपढु"	पवप ₹४०१ वपव	पपघिपपघिंपपघिंपप
"एपवपए"	"द्धपवपद्ध"	पवप ₹५०१ वपव	पपडिपपडिंपपडिंपप
"ऐपवपऐ"	"दुपवपदु"	पवप ₹६०१ वपव	पपचिपपचिंपपचिंपप
"ँपवपँवव"	"द्धपवपद्ध"	पवप ₹७०१ वपव	पपछिपपछिंपपछिंपप
"ऐपवपऐ"	"दुपवपदु"	पवप ₹८०१ वपव	पपजिपपजिंपपजिंपप
"आपवपआ"	"ष्टपवपष्ट"	पवप ₹९०१ वपव	पपझिपपझिंपपझिंपप
"ओपवपओ"	"ष्टपवपष्ट"		पपञिपपञिंपपञिंपप
"औपवपऔ"	"ष्ठपवपष्ठ"	०००.०१०.०११	पपटिपपटिंपपटिंपप
"ऋपवपऋ"	"ल्लपवपल्ल"	००१.०१०.१११	पपठिपपठिंपपठिंपप
"ॠपवपॠ"	"ल्लपवपल्ल"	००२.०१०.२११	पपडिपपडिंपपडिंपप
"लृपवपलृ"	"ल्लपवपल्ल"	००३.०१०.३११	पपढिपपढिंपपढिंपप
"लृपवपलृ"	"ल्लपवपल्ल"	००४.०१०.४११	पपणिपपणिंपपणिंपप
	"ल्लपवपल्ल"	००५.०१०.५११	पपतिपपतिंपपतिंपप
"झपवपझ"		००६.०१०.६११	पपथिपपथिंपपथिंपप
"छपवपछ"	"हुपवपहु"	००७.०१०.७११	पपदिपपदिंपपदिंपप
"टपवपट"	"हूपवपहू"	००८.०१०.८११	पपधिपपधिंपपधिंपप
"टपवपट"	"हूपवपहू"	००९.०१०.९११	पपनिपपनिंपपनिंपप
"डपवपड"	"हूपवपहू"		पपपिपपपिंपपपिंपप
"डपवपड"	"हुपवपहु"	०००.०१०.०११	पपफिपपफिंपपफिंपप
"द्रपवपद्र"	"हूपवपहू"	००१.०१०.१११	पपबिपपबिंपपबिंपप
"रूपवपरू"	"रूपवपरू"	००२.०१०.२११	पपभिपपभिंपपभिंपप
"हपवपह"	"रूपवपरू"	००३.०१०.३११	पपमिपपमिंपपमिंपप
"ळपवपळ"	"दुपवपदु"	००४.०१०.४११	पपयिपपयिंपपयिंपप
	"दूपवपदू"	००५.०१०.५११	पपरिपपरिंपपरिंपप
"क्तपवपक्त"	"दूपवपदू"	००६.०१०.६११	पपलिपपलिंपपलिंपप
"क्यपवपक्य"		००७.०१०.७११	पपळिपपळिंपपळिंपप
"छ्यपवपछ्य"		००८.०१०.८११	पपविपपविंपपविंपप
"टृपवपटृ"		००९.०१०.९११	पपशिपपशिंपपशिंपप
"टृपवपटृ"			पपषिपपषिंपपषिंपप
"ठृपवपठृ"			पपसिपपसिंपपसिंपप
"डृपवपडृ"			

पपहिपपहिंपपहिंपप  
 पपक्षिपपक्षिंपपक्षिंपप  
 पपझिपपझिंपपझिंपप

pg 12/18

pg 13/18

पपचकपपचखपपचापपचपपचपपचप  
पछपपचजपपचझपपचजपपचटपपचठपपचप  
पचठपपचापपचतपपचथपपचदपपचधपपचनप  
पचनपपचपपचकपपचखपपचभपपचमपपचयप  
पघ्नपपचपपचलपपचळपपचळपपचवप  
पचापपचभपपचसपपचहपपचक्रपपचखपपचाप  
पचजपपचठपपचठपपचकपपचयपप

पपइकपपइखपपइगपपइघपपइङपपइचप  
पइछपपइजपपइझपपइञपपइटपपइठपपइड  
पइढपपइणपपइतपपइथपपइदपपइधपपइनप  
पइनपपइमपपइफपपइबपपइभपपइमपपइयप  
पझपपइरपपइलपपइळपपइळपपइवपपइशप  
पइषपपइसपपइहपपइकपपइखपपइगपपइजप  
पइडपपइढपपइफपपइयपप

पपइकपपइखपपइगपपइघपपइङपपइचप  
पइछपपइजपपइझपपइञपपइटपपइठपपइडुप  
पइढपपइणपपइतपपइथपपइदपपइधपपइनप  
पइनपपइपपपइफपपइबपपइभपपइमपपइयप  
पइरपपइलपपइळपपइळपपइवपपइशप  
पइषपपइसपपइहपपइक्रपपइखपपइगपपइजप  
पइडपपइढपपइफपपइयपप



पपफ्कपपफ्खपपफ्मापपफ्घपपफ्ङपपफ्चप  
पपफ्छपपफ्जपपफ्झपपफ्ऑपपफ्ठपपफ्ढप  
पपफ्ढपपफ्णपपफ्त्तपपफ्थपपफ्दपपफ्धपपफ्न्प  
पपफ्न्पपफ्मपपफ्फपपफ्बपपफ्भपपफ्मपपफ्मप  
पफ्प्रपपफ्प्रपपफ्लपपफ्लपपफ्लपपफ्वपपफ्शप  
पफ्षपपफ्सपपफ्हपपफ्क्कपपफ्खपपफ्मापपफ्जप  
पफ्ङपपफ्ढपपफ्फपपफ्मपप

[illegible][illegible]

पपम्कपपम्खपपमापपम्यपपम्हपपम्वपपम्वप  
पम्जपपम्झपपम्जपपम्टपपम्ठपपम्डपपम्ढप  
पम्णापपम्त्तपपम्यपपम्दपपम्यपपम्नपपम्नपपम्प  
पम्फपपम्बपपम्भपपम्पपपम्यपपम्प्रपपम्पपपम्प  
पम्ळपपम्ळपपम्वपपम्शपपम्षपपम्सपपम्हप  
पम्क्कपपम्खपपमापपम्जपपम्हपपम्ढपपम्फप  
पम्पपप

पपक्कपपखपपपापपधपपहपपचपपछप  
पजपपझपपजपपटपपठपपडपपढपपणप  
पत्तपपथपपदपपधपपनपपन्नपपप्पपपफप  
पब्बपपभपपम्मपपयपपप्पपपप्पपपलपपळप  
पळपपवपपशपपषपपसपपहपपक्कपपखप  
पपापपजपपहपपढपपफपपयपप



less common half-forms

पपदकपपदखपपदगपपदघपपदङपपदचपपदछप  
पदजपपदझपपदञपपदटपपदठपपदडपपदढप  
पदणपपदतपपदथपपददपपदधपपदनपपदमप  
पदफपपदबपपदभपपदमपप पदयपपदलप  
पदळपपदमपवपपदशपप पदषपपदसपपदहपप

पपलजकपपलजखपपलजगपपलजघपपलजङपपलजचप-  
पलजछप  
पलजजपपलजझपपलजञपपलजटपपलजठपपलजडप-  
पलजढप  
पलजणपपलजतपपलजथपपलजदपपलजधपपलजनप-  
पलजपप  
पलजफपपलजबपपलजभपपलजमपप पपलयपपलजलप  
पलजळपपलजपवपपलजशपप पपलजषपपलजसपपलज-  
हपप

पपल्यकपपल्यखपपल्यगपपल्यघपपल्यङपपल्यचप-  
पल्यछप  
पल्यजपपल्यझपपल्यञपपल्यटपपल्यठपपल्यडपपल्य-  
ढप  
पल्यणपपल्यतपपल्यथपपल्यदपपल्यधपपल्यनपपल्यपप  
पल्यफपपल्यबपपल्यभपपल्यमपप पपलयपपल्यलप  
पल्यळपपल्यपवपपल्यशपप पपल्यषपपल्यसपपल्यह-  
पप

पपक्रकपपक्रखपपक्रगपपक्रघपपक्रङपपक्रचप  
पक्रछपपक्रजपपक्रझपपक्रञपपक्रटपपक्रठप  
पक्रडपपक्रढपपक्रणपपक्रतपपक्रथपपक्रदप  
पक्रधपपक्रनपपक्रमपपक्रफपपक्रबपपक्रभपपक्रमप  
पपक्रयपपक्रलपपक्रळपपक्रपवपपक्रशप  
पपक्रषपपक्रसपपक्रहपप

पपरकपपरखपपरगपपरघपपरङपपरचप  
परछपपरजपपरझपपरञपपरटपपरठप  
परडपपरढपपरणपपरतपपरथपपरदपपरधप

परञपपरमपपरमपपरमपपरमपपरमप  
परमपपरमपपरमपपरमपपरमपपरमप  
परमपपरमपपरमपपरमप

पपगकपपगखपपगगपपगघपपगङपपगचपपगछप  
पगजपपगझपपगञपपगटपपगठपपगडपपगढप  
पगणपपगतपपगथपपगदपपगधपपगनपपगमप  
पगफपपगबपपगभपपगमपप पगयपपगलपपगळप  
पगपवपपगशपप पगषपपगसपपगहपप

पपघकपपघखपपघगपपघघपपघङपपघचपपघछप  
पघजपपघझपपघञपपघटपपघठपपघडपपघढप  
पघणपपगतपपघथपपघदपपघधपपघनपपघमप  
पघफपपघबपपघभपपघमपप पघयपपघलपपघळप  
पघपवपपघशपप पघषपपघसपपघहपप

पपचकपपचखपपचगपपचघपपचङपपचचपपचछप  
पचजपपचझपपचञपपचटपपचठपपचडपपचढप  
पचणपपचतपपचथपपचदपपचधपपचनपपचमप  
पचफपपचबपपचभपपचमपपचयपपचलपपचळप  
पचपवपपचशपपचषपपचसपपचहपप

पपजकपपजखपपजापपजघपपजङपपजचपपजछप  
पजजपपजझपपजञपपजटपपजठपपजडपपजढप  
पजापपजापपजथपपजदपपजधपपजनपपजमप  
पजफपपजबपपजभपपजमपपजयपपजलपपजळप  
पजपवपपजशपपजषपपजसपपजहपप

पपझकपपझखपपझापपझघपपझङपपझचप  
पझछपपझजपपझझपपझञपपझटपपझठपपझडप  
पझढपपझणपपझतपपझथपपझदपपझधपपझनप  
पझमपपझमपपझबपपझभपपझमपप पपझयप  
पझलपपझळपपझमपवपपझशपपझषपपझसप  
पझहपप

पपञकपपञखपपजापपञघपपञङपपञचप  
पञछपपञजपपञझपपञञपपञटपपञठप  
पञडपपञढपपञणपपञतपपञथपपञदपपञधप  
पञनपपञमपपञमपपञबपपञभपपञमपपञयप  
पञलपपञळपपञमपवपपञशपप पपञषपपञसप  
पञहपप

पपणकपपणखपपणापपणघपपणङपपणचपपणछप  
पणजपपणझपपणञपपणटपपणठपपणडपपणढप  
पणापपणतपपणथपपणदपपणधपपणनपपणमप  
पणफपपणबपपणभपपणमपप पणयपपणलप  
पणळपपणमपवपपणशपप पणषपपणसपपणहपप

पपककपपकखपपकापपकघपपकङपपकचपपकछप  
पकापपकापपकापपकटपपकठपपकडपपकढप  
पकापपकापपकापपकटपपकठपपकडपपकढप  
पकापपकापपकापपकापपकापपकापपकाप  
पकापपकापपकापपकापपकापपकापपकाप  
पकापपकापपकापपकापपकापपकाप

पपककपपकखपपकापपकघपपकङपपकचपपकछप  
पकापपकापपकापपकटपपकठपपकडपपकढप  
पकापपकापपकापपकापपकापपकापपकाप  
पकापपकापपकापपकापपकापपकापपकाप  
पकापपकापपकापपकापपकापपकापपकाप

पपककपपकखपपकापपकघपपकङपपकचपपकछप  
पकापपकापपकापपकटपपकठपपकडपपकढप  
पकापपकापपकापपकापपकापपकापपकाप  
पकापपकापपकापपकापपकापपकापपकाप  
पकापपकापपकापपकापपकापपकाप

पपककपपकखपपकापपकघपपकङपपकचपपकछप  
पकापपकापपकापपकटपपकठपपकडपपकढप  
पकापपकापपकापपकापपकापपकापपकाप  
पकापपकापपकापपकापपकापपकापपकाप  
पकापपकापपकापपकापपकापपकाप

पपक्रपपखपपप्रापपप्रापपप्रापपप्रापपप्रापप  
पजपपप्रापपप्रापपप्रापपप्रापपप्रापपप्रापप  
पप्रापपप्रापपप्रापपप्रापपप्रापपप्रापपप्रापप  
पप्रापपप्रापप पप्रापपप्रापपप्रापपप्रापप  
पप्रापप पप्रापपप्रापपप्रापप

पपक्रपपप्रापपप्रापपप्रापपप्रापपप्रापप  
पप्रापपप्रापपप्रापपप्रापपप्रापपप्रापप  
पप्रापपप्रापपप्रापपप्रापपप्रापपप्रापप  
पप्रापपप्रापपप्रापपप्रापपप्रापपप्रापप  
पप्रापपप्रापपप्रापपप्रापपप्रापपप्रापप  
पप्रापपप्रापपप्रापपप्रापपप्रापपप्रापप  
पप्रापपप्रापपप्रापपप्रापप

पपक्रपपप्रापपप्रापपप्रापपप्रापपप्रापप  
पजपपप्रापपप्रापपप्रापपप्रापपप्रापप  
पप्रापपप्रापपप्रापपप्रापपप्रापपप्रापप  
पप्रापपप्रापपप्रापपप्रापपप्रापपप्रापप  
पप्रापपप्रापपप्रापपप्रापपप्रापपप्रापप  
पप्रापपप्रापपप्रापपप्रापपप्रापपप्रापप